सुन्दरकाण्ड ।

श्री काशी बासी मनियारसिंह क्षत्री कृत ।

अत्यन्त उग्र मारुत सुअन चरितावली,

जिसको डुमरांवँ निवासी नकछेदी तिवारी उपनाम अजान कवि और रामकिशोर भट्ट गौड़ ने रसिक जनों के चित्त विनोदार्थ प्रकाशित किया ।

यह पुस्तक भारतजीवन प्रेस के अधिकार से छपी और उक्त प्रेस में मिलेगी ।

"रननाचै कालिका असुभ लंक चढ़ि नाचै
जम की जमाति नाचै रावन-भुजान पै"।

काशी ।

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुआ ।

सन् १८८१ ई०।

प्रथम बार १०००] [मूल्य /)